सर्व सिद्धि प्रदायक

यज्ञ-विधान

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां
पूज्यपाद गुरुदेव
डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी
द्वारा रचित अनमोल ग्रंथ . . .

पुस्तक	मूल्य
कुण्डलिनी यात्रा	
मूलाधार से सहस्रार तक	150/-
फिर दूर कहीं पायल खनकी	150/-
गुरु गीता	150/-
ज्योतिष और काल निर्णय	150/-
निखिलेश्वरानन्द स्तवन	120/-
हस्तरेखा विज्ञान	
व पंचांगुली साधना	120/-
ध्यान, धारणा और समाधि	150/-
निखिल सहस्रनाम	96/-
विश्व की अलौकिक साधनाएं	96/-
निखिलेश्वरानन्द शतकम	75/-
अमृत बूंद	60/-
स्वर्ण तंत्रम्	60/-
लक्ष्मी प्राप्ति	60/-
निखिलेश्वर चिन्तन	40/-
सिद्धाश्रम का योगी	40/-
निखिलेश्वरानन्द रहस्य	40/-
आधुनिक हिप्नोटिज्म	
के १०० स्वर्णिम सूत्र	60/-
प्रत्यक्ष हनुमान सिद्धि	40/-
भैरव साधना	40/-
स्वर्णिम साधना सूत्र	40/-
मातंगी साधना	40/-
दैनिक साधना विधि	30/-
झर झर अमरत झरै	30/-
तांत्रोक्त गुरु पूजन	30/-
गुरु सूत्र	30/-
मैं बांहे फैलाये खड़ा हूं	20/-
सिद्धाश्रम साधना सिद्धि	20/-
गुरु संध्या	20/-
अप्सरा साधना	20/-
दुर्लभोपनिषद	20/-
बगलामुखी साधना	20/-
धनवर्षिणी तारा	20/-
महाकाली साधना	20/-
शिष्योपनिषद	20/-
भुवनेश्वरी साधना	20/-
दीक्षा संस्कार	20/-
षोडशी त्रिपुर सुन्दरी	20/-
हंसा उड़हु गगन की ओर	20/-
साधना एवं सिद्धि	15/-
गुरु और शिष्य	15/-
नारायण सार	15/-
नारायण तत्व	15/-
गुरुदेव	15/-
सिद्धाश्रम	15/-
दीक्षा	15/-

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर राज.
फोन: 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010

सर्व सिद्धि प्रदायक

यज्ञ-विधान

आशीर्वाद

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

एस-सीरिज

संकलन एवं सम्पादन
श्री अरविन्द श्रीमाली

प्रकाशक
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग,हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - ३४२ ००१ (राज०)
फोन : 0291-2432209, 2433623
फैक्स : 0291-2432010

संस्करण	:	होली पर्व 2008
प्रति	:	5000
मूल्य	:	20/-
मुद्रक	:	सुदर्शन प्रिन्टर्स, 487/505, पीरागढ़ी, दिल्ली - 87 फोन : 25258019

आशीर्वाद

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

अनुक्रम

दो शब्द . . . .

हमारा भारतीय समाज यज्ञों पर अवलम्बित रहा है, अतः यज्ञों के द्वारा समाज को सत्य मार्ग पर बढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सकता है, क्योंकि हजारों वर्षों से यज्ञों की महत्ता निर्विवाद रूप से प्रामाणिक और सत्य मानी जाती रही है।

आज के इस कलियुग में अग्नि में कुछ सामग्री के वितरित कर देने को ही यज्ञ मान लिया जाता है, क्योंकि इस भौतिकवादी युग में, जबकि मनुष्य का झुकांव पाश्चात्य संस्कृति की ओर उन्मुख हो गया है, मानव यज्ञ की मूल क्रिया-पद्धति को भुला बैठा है। आज इसके विशेष जानकार भी नहीं रह गये हैं, जो कि यज्ञ को पूर्ण वैधानिक रूप से सम्पन्न कर उसके वास्तविक अर्थ को स्पष्ट कर सकें।

यज्ञ एक वैज्ञानिक पद्धति है, क्योंकि इसका आधार कोरी कल्पनाएं नहीं है, अपितु वास्तविकता है, यह बात और है कि हम इसे गौण समझ बैठे हैं, क्योंकि नयी पीढ़ी इस प्रकार के कार्यों को ढोंग, अन्धविश्वास और पाखण्ड समझने लगी है, जबकि ये सारे वक्तव्य उनकी हीन मनोवृत्ति एवं क्षीण बुद्धि के परिचायक हैं।

शास्त्रों, पुराणों आदि में ऋषियों, मुनियों आदि ने अनेकों प्रकार के यज्ञों का विधान प्रस्तुत किया है, जैसे— पुत्रेष्टि यज्ञ, अश्वमेघ यज्ञ, विजय यज्ञ, शांति यज्ञ, महालक्ष्मी प्राप्ति यज्ञ, शतचण्डी यज्ञ इत्यादि। यज्ञों के द्वारा हर प्रकार की मनेच्छा को पूर्ण किया जा सकता है, यदि उस यज्ञ विद्या का सही ढंग से समझ कर प्रयोग किया जाए, तो आज का समाज उससे पूर्ण लाभ प्राप्त कर सुखी व समृद्ध हो सकता है।

कहा जाता है कि यज्ञ से ही इस सृष्टि का प्रारम्भ हुआ है, इसका वर्णन **'पुरुष सूक्त'** के चौदहवें मंत्र में इस प्रकार है—

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोरुयासीदाज्यं ग्रीष्म इहमः शरद्धविः।।

अर्थात् परमात्मा सृष्टि का प्रारम्भ करता है, तभी ऋतु-चक्र भी प्रारम्भ हो जाता है। ये पूरी सृष्टि यज्ञ रूपी कुण्ड के समान होती है, जिसमें बसंत ऋतु घृत, ग्रीष्म ऋतु लकड़ी और शीत ऋतु सामग्री के रूप में प्रस्तुत होती है। शरद और ग्रीष्म ऋतु से विविध प्रकार की वायु उत्पन्न होती है और उनकी गतियां उत्पन्न हो जाती हैं, अतः यज्ञ मानव के लिए इस दृष्टि से समस्त ऋतुओं को, समस्त वातावरण व प्रकृति को अपने अनुरूप बना लेने की एक श्रेष्ठतम प्रक्रिया है।

यज्ञ का सीधा सम्बन्ध वेदोक्त मंत्रों से होता है। यज्ञ तो कोई भी सम्पन्न कर सकता है, किन्तु आवश्यकता है उस जटिल प्रक्रिया को सही ढंग से समझने की, क्योंकि जब तक इसकी बारीकियों व रहस्यों को नहीं समझा जायेगा, तब तक किसी प्रकार के कार्यों में पूर्णता भी नहीं पाई जा सकती।

अतः हम दैनिक जीवन में आने वाली बाधाओं के स्वयं निराकरण के लिए संक्षिप्त **"दैनिक यज्ञ विधान"** पुस्तिका आपको भेंट कर रहे हैं, जो आपके लिए हितकारी तो है ही, साथ में समाजोपयोगी भी है। इस पुस्तिका के माध्यम से आप समाज-कल्याण जैसे कार्य कर सकते हैं। **यज्ञ कार्य सप्ताह में एक बार करना ही चाहिए, या फिर माह में एक बार अमावस्या या पूर्णिमा को तो अवश्य ही करना चाहिए।** हमें यह पुस्तिका आपको सौंपते हुए अति प्रसन्नता हो रही है . . . आशा है आप इस पुस्तिका से निश्चय ही लाभान्वित होंगे।

– सम्पादक

यज्ञ की महत्ता
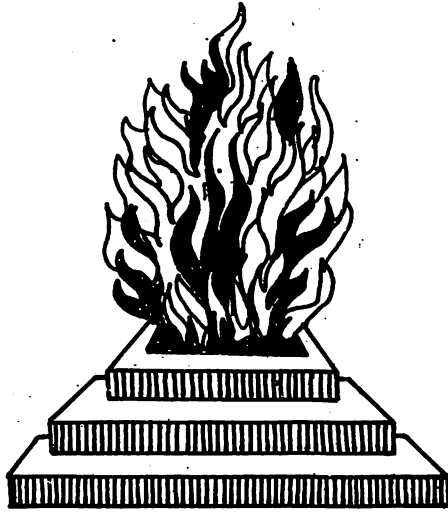
यो यज्ञैः यज्ञ परयैरिञ्चते तंत्र संज्ञितः।
तं यज्ञ पुरुषं विष्णुं नमामि प्रभुमीश्वरम्।।

"जो यज्ञ द्वारा पूजे जाते हैं, यज्ञमय हैं, यज्ञ रूप हैं, उन यज्ञ रूप विष्णु भगवान को नमस्कार है।"

हमारे धर्म में जितनी महत्ता यज्ञ को दी गई है, उतनी और किसी को नहीं। जन्म से लेकर मृत्योपरान्त तक हमारा कोई भी शुभ-अशुभ धर्म कृत्य यज्ञ के बिना पूरा नहीं होता। जन्म से लेकर अन्त्येष्टि तक १६ संस्कार होते हैं, इनमें अग्निहोत्र आवश्यक है। नामकरण, यज्ञोपवीत, विवाह आदि संस्कारों में भी हवन अवश्य होता है। प्रत्येक कथा, कीर्तन, व्रत - उपवास, पर्व- त्यौहार, उत्सव, अनुष्ठान में हवन को आवश्यक माना गया है। सत्यनारायण व्रत-कथा, रामायण-पारायण, गीता पाठ, भागवत सप्ताह आदि कोई भी शुभ कर्म क्यों न हो; हवन इसमें अवश्य होगा।

आज के वैज्ञानिक युग में भी यह सिद्ध हो चुका है कि जिस घर में नित्य हवन होता है, उसके घर में बीमारी नहीं के बराबर आती है, नित्य हवन के लिए छोटा-सा ताम्रपात्र मिलता है, जिसमें तिल, जौ, घी आदि का सम्मिश्रण कर विशेष हवन किया जाता है, और उन मंत्रों का उच्चारण होता है, जो घर की सुख-शांति और आर्थिक समृद्धि के लिए श्रेयस्कर हों।

दैनिक यज्ञ सामग्री

- मात्र घृत से
- तिल, इससे आधे जौ, जौ से आधी शक्कर, शक्कर से आधा घृत।

साधनाओं में भी हवन अनिवार्य है। जितने भी पाठ, पुरश्चरण, जप, साधना आदि किए जाते हैं, चाहे वे वेदोक्त हों या तांत्रोक्त, उनमें किसी न किसी रूप में हवन अवश्य करना पड़ता है। अनुष्ठान या पुरश्चरण में जप से दसवां भाग हवन करने का विधान है। परिस्थितिवश दसवां भाग आहुतियां न दी जा सकें, तो शतांश (सौवां भाग) देना चाहिए या जितना गुरुदेव द्वारा निर्दिष्ट किया जाए। जो नित्य हवन नहीं कर सकते, उन्हें सप्ताह में एक बार रविवार को अथवा माह में एक बार अमावस्या या पूर्णिमा को थोड़ा-बहुत हवन अवश्य करने का प्रयत्न करना चाहिए।

इस पुस्तक में हवन की सरल विधि बताई गयी है, जिसके आधार पर बिना पण्डित-पुरोहित की सहायता लिए कोई भी साधक आसानी से हवन कर सकता है।

साधारण यज्ञ भी बहुत उपयोगी होता है, क्योंकि इससे घर की वायु-शुद्धि, रोग-निवृत्ति, अनिष्टों से आत्मरक्षा होती है। विशेष विधि-विधानों के साथ किए गए यज्ञ-आयोजन तो असाधारण पुण्य उत्पन्न करते ही हैं, साथ ही सद्भावनाओं एवं सद्-प्रवृत्तियों को बढ़ाते हुए हमें विश्वशांति एवं मानव-कल्याण का माध्यम भी बनाते हैं। किसी न किसी रूप में यज्ञ परम्परा को जारी रखा जाए, तो भारतीय संस्कृति को एक दृढ़ आधार प्राप्त होगा।

सामान्य यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों की व्यवस्था

हवन-कुण्ड को आकर्षक एवं सुरुचिपूर्ण सजाना चाहिए। कुण्ड के चारों ओर हल्दी, रोली, आटे से चौक पूरना चाहिए।

स्नानादि से निवृत्त हो, शुद्ध वस्त्र पहिन कर, शुद्ध भारतीय वेशभूषा में हवन करें।

कुण्ड के ईशान कोण में कलश स्थापन करना चाहिए। कलश पर आम के पत्तों का उपयोग कर कलश के ऊपर ढक्कन में चावल, गेहूं का आटा या मांगलिक द्रव्य रखना चाहिए।

कलश के चारों ओर कुंकुम या हल्दी से स्वस्तिक (मांगलिक चिह्न) अंकित कर दें।

पूर्व दिशा में जिधर कलश स्थापित हो ,उधर यज्ञकर्त्ता (आचार्य) बैठे। (आचार्य ब्रह्म स्वरूप होता है) अब यजमान आचार्य के दाएं हाथ में कलावा बांधे और रोली से तिलक कर चरण स्पर्श करे।

आचार्य द्वारा कलावा बन्धन कार्य होना चाहिए।

यजमान पश्चिम में बैठे और उसका मुंह पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए।

समिधा (लकड़ी) आम, पीपल, ढाक, बरगद आदि की ली जा सकती

है। नीम, बबूल की लकड़ी काम में नहीं आती। लकड़ी सूखी, छोटी कटी हुई, आठ-दस इंच से लम्बी न हो।

अग्नि प्रवेश के लिए बहुत छोटी-छोटी लकड़ियां रहनी चाहिए। समिधाधान के लिए चार लकड़ियां भी पहले से ही तैयार रखें।

आहुति देते समय निम्न सावधानियां रखें–

१. मध्यमा और अनामिका उंगलियों पर सामग्री ली जाए और अंगूठे का सहारा लेकर उसे अग्नि में छोड़ा जाए।
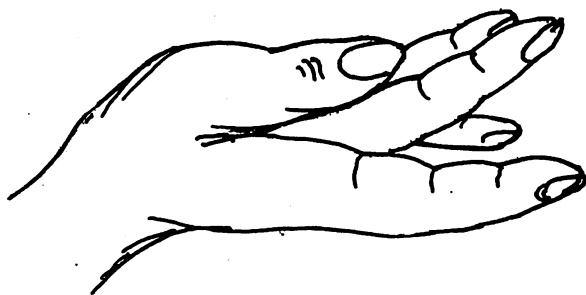
२. सभी लोग सुखासन में बैठें।

३. आहुति झुक कर डालें। इस तरह न फेंके, कि आधी धरती पर गिरे और आधी अग्नि में।

४. जब 'स्वाहा' शब्द बोला जाए, तभी सब लोग एक साथ आहुति डालें।

५. हवन-कुण्ड की अग्नि के सम्बन्ध में तथा आरती के समय दीपक के सम्बन्ध में आवश्यक सावधानी रखें।

यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्री

यज्ञ तथा पूजा के लिए निम्नलिखित सामग्री पहले से ही मंगाकर रख लेनी चाहिए –

सामग्री –

शुद्ध जल, गंगाजल, केसर, चन्दन, (घिसा हुआ) अक्षत, कुंकुम, पुष्प, बिल्वपत्र, दूर्वा, तुलसीदल, शमीपत्र, पुष्प-मालाएं, गाय का दूध-दही तथा घी, चीनी, शहद, गुलाबजल, गन्ने का रस, नारियल-जल, इत्र। भगवान को अर्पित करने के लिए वस्त्र, भगवान को पोंछने के लिए वस्त्र, रक्त-सूत्र (मौली)। यज्ञोपवीत, अबीर, गुलाल, सिन्दूर, भस्म। अगरबत्ती, धूप, गुग्गुल, कर्पूर, तिल का तेल, गौ-घृत, रूई (फूल बत्तियां), माचिस। नैवेद्य हेतु बताशे, पेड़े, लड्डू आदि। नारियल, बेर, अनार, केला, सेब आदि फल। पान, सुपारी, चूरा, इलायची, लवंग (लौंग)। सिक्के, रुपये।

पूजा पात्र –

पंचपात्र, अर्घ्यपात्र, कलश, निर्माल्यपात्र, अभिषेकपात्र, घंटी, शंख, एक, तीन व पांच की आरती, कर्पूर आरती, दीपक, अगरबत्ती स्टैण्ड, माचिस, बाल्टी, भगोने, थाली, गिलास, कटोरी, चम्मच, चौकी-पट्टे उपयोगानुसार।

कम्बल, रेशम या कुश का आसन, पूजा-अर्चना स्तोत्र की पुस्तक, जप माला, गुरु तथा इष्ट का प्राण-प्रतिष्ठित चित्र व यंत्र।

स्वस्तिवाचन

यज्ञ में बैठने वालों पर तथा देवता व इष्ट पर पीले पुष्प या पीले अक्षत की वर्षा निम्न मंत्र बोल कर करें—

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

ॐ अग्निर्देवता वातोद्देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता आदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता।।

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टवा (गूं) सस्तनूभिर्व्यशेम हि देवहितं यदायुः

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (गूं) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व (गूं) शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्नऽआसुव।।

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्।।

एतन्ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव।।

मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ (गूं) समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽ इह मादयन्तामो३म् प्रतिष्ठ।।

एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते। सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति।।

गुरु स्मरण

यज्ञ का प्रारम्भ गुरु स्मरण से करना चाहिए, क्योंकि हमारा प्रत्येक दिन हमारे लिए एक नया जीवन है, रात्रि के बाद जब व्यक्ति जागता है, तो वह एक नया जीवन लेकर उठता है। शास्त्रों में लिखा है कि जीवन का प्रारम्भ और अवसान गुरु-स्मरण से ही उचित है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में बताया गया है– किसी भी प्रकार की पूजा, साधना, उपासना तब तक व्यर्थ है, जब तक कि जीवन में गुरु न हों।

महाभारत के शान्ति पर्व में बताया गया है– किसी भी प्रकार की पूजा आदि के समय अपने दाहिने हाथ की ओर गुरु का आसन बिछा देना चाहिए, और यह भावना मन में लानी चाहिए, कि मेरे गुरुदेव बैठे हैं, और उनके निर्देशन में ही मैं पूजा, यज्ञ, साधना, अनुष्ठान, व्रत-उपवास या अन्य कोई भी कार्य सम्पन्न कर रहा हूं।

विष्णु पुराण में बताया गया है– जब तक गुरु का आसन बिछा कर गुरु स्तवन न किया जाए, तब तक किसी भी पूजा या साधना में सफलता प्राप्त नहीं होती।

साधक चाहे पुरुष हो या स्त्री, प्रत्येक के जीवन में गुरु का महत्व और स्थान आवश्यक है, उसे चाहिए कि वह प्रातः उठते समय गुरु स्तवन करे और इसके बाद ही दैनिक कार्य में प्रवृत्त हो।

वशिष्ठ ने कहा है– स्नानादि से निवृत्त होकर साधक आसन पर बैठ जाएं, अपने दाहिनी ओर गुरु का आसन बिछा लें, उस पर गुरु की कल्पना करें अथवा उनका चित्र या मूर्ति हो तो अपने सामने रखें और निम्न गुरु पाठ करें, इसके बाद ही अन्य किसी प्रकार की पूजा, यज्ञ, साधना या अनुष्ठान आदि सम्पन्न करें–

गुरु पादुका स्तवन

ॐ नमो गुरुभ्यो गुरु पादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः ।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्यः ।।१।।

ऐंकार ह्रींकार रहस्ययुक्त श्रींकारगूढ़ार्थ महाविभूत्या ।
ॐकारमर्मप्रतिपादिनीभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ।।२।।

होत्राग्नि होत्राग्निहविष्यहोतृ होमादिसर्वाकृतिभासमानम् ।
यद् ब्रह्म तद्बोधवितारिणीभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ।।३।।

कामादिसर्पव्रजगारुडाभ्यां विवेक वैराग्य निधिप्रदाभ्याम् ।
बोधप्रदाभ्यां द्रुतमोक्षदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ।।४।।

अनन्त संसारसमुद्रतार नौकायिताभ्यां स्थिरभक्तिदाभ्याम् ।
जाड्याब्धिसंशोषणवाडवाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् । ।।५।।

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

इसके पश्चात् निखिलेश्वरानन्द स्तुति और सच्चिदानन्द स्तवन का पाठ कर सकते हैं।

निखिलेश्वरानंद स्तुति

ॐ नमस्ते सते सर्व लोकाश्रयाय नमस्ते चिते विश्व-रूपात्मकाय ।
नमोऽद्वैत तत्त्वाय मुक्ति प्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने निर्गुणाय ।।

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं, त्वमेकं जगत्-कारणं विश्व-रूपम् ।
त्वमेकं जगत् कर्तृ-पातृ-प्रहर्तृ, त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ।।

भयानां भयं भीषणं भीषणानाम्, गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम् ।
महोच्चैः पदानां नियन्तुः त्वमेकं, परेषां परं रक्षकं रक्षकानाम् ।।

परेशं प्रभो! सर्व-रूपाविनाशिन्, अनिर्देश्य सर्वेन्द्रियागम्य सत्य ।
अचिन्त्याक्षर व्यापकाव्यक्त-तत्व, जगद्-भासकाधीश पायादपायात् ।।

एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा ।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च ।।

नमस्ते नमस्ते विभो! विश्वमूर्ते। नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते ।
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्यः नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्यः ।।

तदेकं स्मरामस्तदेकं जपामः तदेकं जगत्-साक्षि-रूपं नमामः ।
तदेकं निधानं निरालम्बरूपं भवाम्बोधि पोतं शरण्यं व्रजामः ।।

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्र-मरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः ।
वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैः गायन्ति यं सामगाः ।।

ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो ।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुर गणा देवाय तस्मै नमः ।।

सच्चिदानन्द स्तवन

सिद्धाश्रमोऽयं परमं विदूषं, ज्ञानं च दिव्यं महतं महीतं।
आतेव नित्यं परमं पवित्रं, दिव्यात्म रूपं प्रणमं नमामि ।।

आविर्हताम् परमं वदेवं, ॠग्वेद रूपं ज्ञेयं स्वरूपं।
यज्ञोत्वतां पूर्ण मदेव नित्यं, विज्ञान रूपं सत् चित् स्वरूपं ।।

ज्ञानर्वदा च वदितं ब्रह्माण्ड रूपं, नित्यं वदैव वहितं सहितं सदेवं।
शब्दोवतां व्यर्थ मदैव नित्यं, किं पूर्व परं वहितं महितं इच नित्यं ।।

शिष्योर्वतां वै परिपूर्णरूपं, विह्वल स्वरूपं आत्मान् नित्यं।
आज्ञोवताम् वै परमं पवित्रं, पूर्णत्व रूपं गुरुवं नमामि ।।

स्मरणं वदेवं वदितं वदेवं, गुरुदेव नित्यं महिनां स्वरूपम्।
आत्मोच्छ्वास वहितं सहितं सदेवं, शब्दोर्वतां वै गुरवे परेशं ।।

न तातो न माता न बन्धु र्न भ्राता।
न रूपं न ज्ञानं, न चिन्त्यं न नित्यं ।।

न योगं न मंत्रं न तंत्रं न नित्यं।
सत् चित् स्वरूपं मंत्रं च तंत्रं ।।

यज्ञ-विधान

पवित्रीकरण

पवित्रीकरण के लिए बाएं हाथ में जल लेकर दाहिनी हथेली से बंद कर निम्न मंत्र बोलें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यान्तरः शुचिः।

मंत्र पूरा होने के बाद इस अभिमंत्रित जल को दाहिने हाथ की उंगलियों से अपने सम्पूर्ण शरीर पर छिड़क दें।

आचमन

आंतरिक और बाह्य शुद्धि के लिए पंचपात्र से आचमनी द्वारा जल लेकर तीन बार निम्न मंत्रों के उच्चारण के साथ जल को पी लें–

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।
ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीःश्रयतां स्वाहा।
ॐ नारायणाय नमः बोल कर हाथ धो लें।

शिखा बन्धन

तदुपरान्त शिखा पर दाहिना हाथ रखकर मस्तिष्क में स्थिर चिद्रूपिणी महामाया दिव्य तेजस् शक्ति का ध्यान करते हुए अपने सिर पर दाहिना हाथ रखें, जिससे साधना में प्रवृत्त होने के लिए आवश्यक ऊर्जा प्राप्त हो सके–

चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।

प्राणायाम

निम्न मंत्र का उच्चारण करते समय बाएं हाथ की हथेली पर दाहिने हाथ की कोहनी रखें और उंगलियां बन्द करके केवल अंगूठे से नाक का दाहिना स्वर बन्द कर लें और बाएं से श्वास खींचते समय तेजस्वी प्राण का ध्यान करना चाहिए, कुछ देर श्वास अन्दर रोके रखें, तत्पश्चात् कनिष्ठिका एवं मध्यमा उंगलियों से नाक का बायां छिद्र बन्द करें तथा दाहिने नाक से श्वास छोड़ देना चाहिए, श्वास प्रक्रिया बहुत धीरे-धीरे और निम्न मंत्र को मन ही मन जप करते हुए करें—

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्। ॐ आपोज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वः ॐ।

न्यास

बाएं हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की समूहबद्ध पांचों उंगलियों से निम्न मंत्रों के साथ शरीर के विभिन्न अंगों को स्पर्श करते समय ऐसी भावना रखनी चाहिए, कि वे सभी अंग शक्तिशाली, पवित्र और महा तेजस्वी बन रहे हैं—

ॐ वाङ्गमे आस्येऽस्तु (मुख को)
ॐ नसोऽर्मे प्राणोऽस्तु (नासिका के दोनों छिद्रों को)
ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु (दोनों नेत्रों को)
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु (दोनों कानों को)
ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु (दोनों बांहों को)
ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु (दोनों जंघाओं को)
ॐ अरिष्टानि. अङ्गानि सन्तु (शरीर के सभी अंङ्गों पर जल छिड़कें)

आसन पूजन

निम्न मंत्र पढ़कर आसन के नीचे अक्षत, पुष्प व जल अर्पित करें और पृथ्वी माता से हाथ जोड़कर प्रार्थना करें—

ॐ ह्रीं क्लीं आधारशक्ति कमलासनाय नमः।
ॐ पृथ्वि! त्वया धृतालोका देवि! त्वं विष्णुना धृता
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्।
ॐ आधारशक्तये नमः, ॐ कूर्मासनाय नमः, ॐ अनन्तासनाय
नमः, ॐ विमलासनाय नमः, ॐ आत्मासनाय नमः।

दिग्बन्ध

ॐ अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूताः विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्म समारभे।

यह उच्चारण करते हुए चारों दिशाओं में, ऊपर और नीचे जल या अक्षत छिड़क दें, तत्पश्चात् अपनी बाईं एड़ी से भूमि पर तीन बार आघात करें।

भूमि शुद्धि

भूमि पर दाहिना हाथ रख कर यह मन्त्र बोलें—

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्यधर्त्री।
पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ (गूं) ह पृथिवीं मा हि (गूं) सीः।।

दायीं नासिका द्वारा श्वास लेते हुए व निम्नांकित मंत्र का स्मरण करते हुए ऐसी भावना करें— 'मैं मूलाधार स्थित जीवात्मा को सुषुम्ना मार्ग से ऊपर ले जाकर सहस्रार स्थित परशिव के साथ एक करता हूं' और फिर बायीं नासिका द्वारा श्वास को बाहर निकाल दें—

ॐ मूलश्रृंगाटकात् सुषुम्नापथेन जीवशिवं
परमशिव पदे योजयामि स्वाहा।

तत्पश्चात् नीचे दिए गए पांच मंत्रों के द्वारा क्रमशः शोधन की पांच भावनाएं करें—

१. ॐ यं संकोचशरीरं शोषय शोषय स्वाहा।

(मेरे सूक्ष्म शरीर का शोषण हो रहा है।)

२. ॐ रं संकोचशरीरं दह दह पच पच स्वाहा।

(मेरा सूक्ष्म शरीर दग्ध हो रहा है।)

३. ॐ वं परमशिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहा।

(मेरे सूक्ष्म शरीर का भस्म ब्रह्मरन्ध्रस्थ सोमंडल से द्रवित अमृतधारा से सिंचित हो रहा है।)

४. ॐ लं शांभवशरीरं उत्पादयोत्पादय।

(अमृतसिंचित भस्म से नूतन, दिव्य शरीर उत्पन्न हो रहा है।)

५. ॐ हंसः सोऽहं अवतर अवतर शिवपदात्।

(मैं शिवमय होकर मूलाधार में स्थित हूं।)

जीवं सुषुम्नापथेन प्रविश। मूलश्रृंगाटकं उल्लसोल्लस,
ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल, हंसः सोऽहं स्वाहा।

इतने विस्तारपूर्वक भूतशुद्धि न कर सकें, तो कम-से-कम **"ॐ हंसः सोऽहं"** के स्मरण से अपने मन की भावना निष्पाप, अमृत-चैतन्य रूपेण करनी चाहिए।

चन्दन, भस्म, तिलक धारण

निम्न मंत्र से चन्दन या रोली को यज्ञ कर्त्ताओं, उपस्थित लोगों तथा स्वयं के मस्तक (ललाट) पर लगाएं—

कान्तिं लक्ष्मीं धृतिं सौख्यं सौभाग्यमतुलं मम।
ददातु चदनं नित्यं सततं धारयाम्यहम्।।

कलावा (मौली, रक्षा सूत्र) बांधने का मंत्र

निम्न मंत्र उच्चारण के साथ पुरुषों के दाहिने हाथ में और महिलाओं के बाएं हाथ में कलावा बांधा जाए—

ॐ व्रतेन दीक्षा माप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धा माप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

यज्ञोपवीत धारण करने का मंत्र

नया यज्ञोपवीत का धारण निम्न मंत्र बोलकर करें—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

पुराना यज्ञोपवीत उतारना

निम्न मंत्र बोलते हुए पुराना यज्ञोपवीत गले में से ही होकर उतारना चाहिए—

ॐ एतावद् दिनपर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया
जीर्णत्वात्ते परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्।

संकल्प

साधक हाथ में जल लेकर संकल्प करें—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणः द्वितीय परार्द्धे श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे, अमुक क्षेत्रे, अमुक नगरे, अमुक नाम संवत्सरे, अमुक अयने, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक पुण्यतिथौ, अमुक वासरे, सर्वेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानस्थितेषु, अमुक नाम, अमुक गोत्रोत्पन्नोहं, अमुक देवता प्रीत्यर्थे यथा ज्ञानं, यथा मिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये, तदङ्गत्वेन हवि कर्म च करिष्ये।।

दक्षिण हाथ में जल, गंधाक्षत, पुष्प, सुपारी आदि मंगल द्रव्य लेकर उपर्युक्त प्रकारेण उच्चारण करके निर्माल्यपात्र में उसे छोड़ दें।

कलश स्थापना

जल तथा कुंकुम से यंत्र बनाकर, निम्न मंत्र बोलकर कलश स्थापन देव के दाहिनी ओर (अपने बायीं ओर) करें—

ॐ आधार शक्तिभ्यो नमः।

मंगल पाठ करने के बाद सामने रखे हुए कलश का पूजन करें, उस पर कुंकुम या केसर की नौ बिन्दियां लगाएं, स्वस्तिक का चित्र अंकित करें

कलश के अन्दर एक सुपारी तथा एक रुपया डालें, कलश के ऊपर रखने के लिए लाल वस्त्र लपेट कर नारियल रखें और उस पर अबीर, गुलाल चढ़ा कर कलश के अन्दर जल डालें और फिर हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें—

सरितः सागराः सकलास्तीर्थानि जलदा नदाः
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः
अंगैश्च सहिताः सर्वैः कलशं तु समाश्रिताः
देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्
त्वत्तोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः

यह बोलकर अक्षत को कलश के ऊपर छोड़ दें तथा गन्धाक्षत, पुष्प से कलश की पूजा करके कलश के ऊपर हाथ रखकर वरुण मंत्र बोलें—

ॐ वरुणस्योतम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋत सदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद।

ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन्कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि, पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

गन्धाक्षत, पुष्प जल में डालकर तीर्थों का आवाहन करें—

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु

कलश प्रार्थना

देव दानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदाकुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।
प्रसन्नो भव। वरदो भव। अनया पूजया वरुणाद्यावाहिता देवता प्रीयन्तां न मम।

दीपक पूजन

दीपक को प्रज्वलित करके, बाजोट पर चन्दन से त्रिकोण बनाकर, उस पर प्रतिष्ठित करें तथा गन्धाक्षत, पुष्प से निम्न मंत्रों द्वारा पूजन करें–

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।
ॐ अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा। हव्यवाड्जुह्वास्यः।
अस्मिन्क्षेत्रे दीपनाथ निर्विघ्नं सिद्धिहेतवे।
भवानीपति-पूजार्थमनुज्ञां दीयतां मम।।
दीपो ज्योतिः परब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे ध्वान्तं संविद्दीप नमोस्ऽतु ते।
भो दीप देव रूपस्त्वं कर्मसाक्षिह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्म समाप्तिःस्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव।।

दीपक, शुद्ध गो-घृत या तिल के तेल का होना चाहिए। इन दोनों का मिश्रण या वनस्पति घी व अन्य तैल का प्रयोग वर्जित है। घी का दीपक देव के दक्षिण भाग में व तेल का दीपक देव के वाम भाग में रखना चाहिए।

अगरबत्ती, धूप को जलाकर देव के वाम भाग में या आगे रखें, दाहिनी ओर नहीं।

श्री गुरु पूजन

नित्य देव पूजन के प्रारम्भ में या अन्त में श्री गुरु चरण स्मरण का अनिवार्य विधान है। प्रायः इस स्मरण के साथ श्री गुरु चरण का पूजन भी किया जाता है। विशेष पर्वों पर व व्यास पूर्णिमा, शंकर जयन्ती आदि के अवसरों पर विस्तार से गुरु पूजन होना चाहिए। ऐसे अवसरों के लिए यहां संक्षिप्त गुरु पूजन विधि दे रहे हैं इसमें से यथाशक्ति कुछ उपचारों को साधक अपने दैनिक क्रम में अपना सकते हैं।

श्री गुरु ध्यान

द्विदल कमलमध्ये बद्धसंवित्सुमुद्रं,
धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम्।
श्रुतिशिरसिविभान्तं बोधमार्तण्डमूर्तिं,
शमिततिमिरशोकं श्री गुरुं भावयामि।।
हृद्यंबुजे-कर्णिकमध्यसंस्थं सिंहासने संस्थितदिव्यमूर्तिम्।
ध्यायेद्गुरुं चन्द्रशिलाप्रकाशं चित्पुस्तकाभीष्टवरं दधानम्।।
श्रीगुरु चरणकमलेभ्यो नमः ध्यानं समर्पयामि।

आवाहन

ॐ स्वरूपनिरूपण हेतवे श्री गुरवे नमः। ॐ स्वच्छप्रकाश-विमर्श-हेतवे श्रीपरमगुरवे नमः। ॐ स्वात्माराम पञ्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठि गुरवे नमः, आवाहयामि पूजयामि।

आसन

ॐ इदं विष्णुर् विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पा (गूं!) सुरे स्वाहा।।
सर्वात्मभाव संस्थाय गुरवे सर्वसाक्षिणे।
सहस्रारसरोजातमासनं कल्पयाम्यहम्।।

श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।
चरणों में पुष्प चढ़ाएं।

पाद्य स्नान

श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयम्, स्नानं च समर्पयामि। पुनः आचमनीयं जलं समर्पयामि।

चरणों को उपर्युक्त उपचार अर्पित करके अच्छी तरह से पोंछ दें व वस्त्र अर्पित करें–

वस्त्र

श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।

चन्दन, अक्षत

महावाक्योत्थविज्ञानं गन्धाढ्यं तापमोचनम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः चन्दनं अक्षतान् च समर्पयामि।

पुष्प

तुरीयवनसंभूतं दिव्यभावमनोहरम्।
तारादिमनुपुष्पालिं गृहाण गुरुनायक।।
श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः पुष्पाणि बिल्वपत्राणि च समर्पयामि।

इसके पश्चात् अष्टोत्तरशत आदि गुरु नामों से अर्चना करें। यदि श्री गुरु का ललाट पूजन करना हो, तो यहां पर 'तमोस्त्वन्याय' आदि दिए गए मंत्रों से गन्धाक्षत, पुष्प अर्पित करें।

धूप

श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः धूपं आघ्रापयामि।

दीप

श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।

नैवेद्य

समर्पण— ॐ गुरुदेवाय विद्महे परब्रह्माय धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।
श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि नानाऋतुफलानि च समर्पयामि।

ताम्बूल, दक्षिणा

श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः सदक्षिणां ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजन (आरती)

नीराजनं निर्मलदीप्तिमद्भिर् दीपाङ्कुरैरुज्ज्वलमुछ्रितैश्च।
घंटानिनादेन समर्पयामि मृत्युंजयाय त्रिपुरान्तकाय।।
श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः नीराजनं दर्शयामि।

जल आरती

ॐ द्यौः शांतिरन्तरिक्ष (गूं) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व (गूं) शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

प्रदक्षिणा

परिभ्रमन्ति ब्रह्माण्डकोट्यो यस्य संपदे।
तस्य श्रीगुरुनाथस्य संवित्दृष्ट्या प्रदक्षिणम्।।
श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पांजलि

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पांजलि मया दत्ता गृहाण गुरुनायक।।
श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः मंत्र-पुष्पांजलिं समर्पयामि।

नमस्कार प्रार्थना स्तुति

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुःगुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशङ्करम्।।

गुरु पंक्ति नमस्कार

अपनी बायीं ओर चावल की पांच ढेरियां बनाकर उस पर गुरु यंत्र स्थापित करें तथा केसर की बिन्दी लगाएं, फिर निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ गुं गुरुभ्यो नमः ॐ परम गुरुभ्यो नमः
ॐ पं परात्पर गुरुभ्यो नमः
ॐ पं परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः
ॐ सिद्धाश्रमाय नमः
ॐ सिद्धाश्रमस्य समस्त ऋषिभ्यो नमः

विशेषार्घ्य

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं;
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।
श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।।

समर्पण

देवनाथ गुरो स्वामिन् देशिकस्वात्मनायक।
त्राहि त्राहि कृपा सिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु।।
अनया पूजया श्रीगुरुः प्रीयन्ताम्। ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

श्री गणेश पूजन

हाथ में अक्षत, पुष्प, कुंकुम लेकर निम्न मंत्रों से विघ्न को दूर करने के लिए गणेश-विग्रह के सामने हाथ जोड़कर मंगलकामना करें—

ध्यान

ॐ गणानां त्त्वा गणपति (गूं) हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति (गूं) हवामहे निधीनां त्वा निधिपति (गूं) हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधाम्।
ॐ गं गणपतये नमः ध्यानं समर्पयामि।

आवाहन

हे हेरम्ब! त्वमेह्येहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज।
सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्ष्यलाभपितुः पितः।।
ॐ गं गणपतये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

यह उच्चारण करके गणेश-विग्रह पर अक्षत छिड़क दें। विग्रह के अभाव में सुपारी पर रक्त सूत्र (मौली) लपेट कर पात्र में रखें।

ॐ "गं गणपतये नमः सर्वोपचारार्थे गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि"

प्रार्थना पूर्वक क्षमा प्रार्थना

विनायक वरं देहि महात्मन् मोदकप्रिय।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

विशेषार्घ्य

अर्घ्यपात्र में जल, चन्दन, अक्षत, पुष्प, दूर्वा, श्रीफल आदि मंगल द्रव्य लेकर भगवान् के दांए हाथ में अर्पित करें—

निर्विघ्नमस्तु निर्विघ्नमस्तु निर्विघ्नमस्तु। ॐ तत् सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।
अनेन कृतेन पूजनेन सिद्धिबुद्धिसहितः श्री गणाधिपतिः प्रीयन्ताम्।

पूजा समर्पण जल भगवान के दांए हाथ में अर्पित करें।

शिव पूजन

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्ग परशुमृगवराभीति हस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं,
विश्ववाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।
ॐ श्री उमामहेश्वराभ्यां नमः आवाहयामि, स्थापयामि पूजयामि।।

श्री लक्ष्मी पूजन

पद्मासनां पद्मकरां पद्ममालाविभूषिताम्।
क्षीरसागरसंभूतां हेमवर्ण-समप्रभाम्।।
क्षीरवर्णसमं-वस्त्रं-दधानां हरिवल्लभाम्।
भावेय भक्तियोगेन भार्गवीं कमलां शुभाम्।।
सर्वमंगलमांगल्ये विष्णुवक्षःस्थलालये।
आवाहयामि देवि त्वां क्षीरसागरसम्भवे।।
पद्मासने पद्मकरे सर्वलोकैकपूजिते।
नारायणप्रिये देवि सुप्रीता भव सर्वदा।।
श्रीलक्ष्मीदेव्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

भगवती दुर्गा पूजन

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्य दुःखभयहारिणि का त्वदन्या;
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।
ॐ श्री दुर्गायै नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

संक्षिप्त नवग्रह पूजन

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशिः भूमिसुतोबुधश्च।

गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहा शांतिकरा भवन्तु।।

षोडश मातृका पूजन

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।
धृतिः पुष्टिः तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडशः।
ॐ श्री षोडशमातृकाभ्यो नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

सप्त मातृका पूजन

कीर्तिलक्ष्मीद्युति मेधा सिद्धि प्रज्ञा सरस्वती।
मांगलेषु प्रपूज्या च सप्तैता दिव्य मातरः।।
श्री सप्तमातृकाभ्यो नमः।
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

भैरव पूजन

कार्य की सम्पन्नता, निर्विघ्नता और सिद्धि के लिए भैरव का आह्वान व पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए। पूजा प्रारम्भ करने के लिए भैरव से हाथ जोड़कर इस प्रकार अनुमति की याचना करें—

ॐ यो भूतानामधिपतिर्यस्मिन् लोका अधिश्रिताः।
यऽईशे महाते महांस्तेन गृह्णामि त्वामहं मयि गृह्णामि त्वामहम्।।
ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।।
ॐ भं भैरवाय नमः।

सर्वदेव नमस्कार

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणपतये नमः। ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः। ॐ परम तत्त्वाय निखिलेश्वरानन्दाय गुरुभ्यो नमः। ॐ सिद्धाश्रमस्य समस्त ऋषिभ्यो नमः। ॐ सिद्धाश्रमाय नमः ॐ लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः। ॐ उमा महेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणी

हिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शची पुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातृपितृ चरणकमलेभ्यो नमः। ॐ कुल देवताभ्यो नमः। ॐ इष्ट देवताभ्यो नमः। ॐ ग्राम देवताभ्यो नमः। ॐ स्थान देवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः। ॐ सर्वाभ्यो देवशक्तिभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्य आदित्येभ्यो नमः। ॐ सर्वाभ्यो मातृशक्तिभ्यो नमः।

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्र कोटि युगधारिणे नमः।।
नारायणो त्वं निखिलेश्वरो त्वं माता पिता गुरु आत्मा त्वमेव।
ब्रह्मा त्वं विष्णु रुद्रस्त्वमेवं सिद्धाश्रमो त्वं गुरुवं प्रणम्यम्।।

आत्मरक्षा विधान

आत्मरक्षा हेतु निम्न स्तोत्र कवच का पाठ करें—

गुरुदेवः शिरः पातु हृदयं निखिलेश्वरः।
कठं पातु महायोगी वदनं सर्व दृग्-विभुः।।
करौ मे पातु पूर्णात्मा पादौ रक्षतु स्वामिनः।
सर्वाङ्गं सर्वदा पातु परं ब्रह्म सनातनः।।

अर्थात्, परम पूज्य गुरुदेव हमारे सिर की रक्षा करें। परम पूज्य "स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी" हमारे हृदय की रक्षा करें। महायोगी गुरुदेव हमारे कण्ठ की रक्षा करें, और समस्त ब्रह्माण्ड की रक्षा करने वाले ब्रह्म स्वरूप गुरुदेव हमारे शरीर की रक्षा करें।

पूर्ण स्वरूप गुरुदेव मेरे दोनों हाथों की रक्षा करें, मेरे स्वामी मेरे दोनों पैर की रक्षा करें, सनातन ब्रह्म स्वरूप परम पूज्य गुरुदेव "स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी" मेरे समस्त शरीर की रक्षा करें।

अग्नि स्थापन

निम्नलिखित मंत्रों से तीन पुष्प गुच्छों द्वारा अग्नि को आसन प्रदान करें, और एक चम्मच से कर्पूर अथवा घी में भीगी हुई रूई की मोटी बत्ती जलाकर कुण्ड में अग्नि प्रज्वलित कर पंचोपचार पूजन करें—

त्वमादिः सर्वभूतानां संसारार्णवतारकः

परमज्योतिस्वरूपस्त्वमासनं सफलीकुरु ।।
वैश्वानर नमस्तेऽस्तु नमस्ते हव्यवाहन।
स्वागतं ते सुरश्रेष्ठ शांतिं कुरु नमोऽस्तु ते ।।
ॐ अग्नये नमः। अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि, गन्धाक्षत, पुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि।

अग्नि प्रदीपन मंत्र

अग्निदेव को ऊर्ध्वमुखी होने की प्रार्थना करें—

ॐ अं अग्नये नमः ऊर्ध्वमुखी भव।

अग्नि चैतन्य मंत्र

ॐ अं अग्नये नमः चैतन्यो भव।

अग्नि चैतन्य होने की कामना करें, फिर आहुति प्रदान करें।

समिधाधानम्

यज्ञ-कुण्ड में अग्नि प्रज्वलित होने पर पतली, छोटी चार समिधायें घी में डुबोकर, निम्न मंत्रोच्चारण कर, एक-एक करके चार बार समिधा डालें—

१. ॐ अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व। चेद्ध वर्धय चासमान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसे नान्नाद्येन समेधय, स्वाहा। इदम् अग्नये जातवेदसे इदं न मम।
२. ॐ समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। अस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम।
३. ॐ सुसमिद्धाय शोचिसे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम।।
४. ॐ तं त्वा समद्धिभिरंगिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा। इदमग्नये अंगिरसे इदं न मम।।

आज्याहुति

निम्न मंत्रों को बोलते हुए घी से आज्याहुति दें—

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम।।
ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदं न मम।।
ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।।
ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम।।
ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम।।
ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे इदं न मम।।
ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम।।

फिर निम्न मंत्रों से आहुति दें—

ॐ विष्णवे स्वाहा। इदं विष्णवे इदं न मम।।
ॐ शंभवे स्वाहा। इदं शंभवे इदं न मम।
ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। इदं लक्ष्म्यै इदं न मम।
ॐ सरस्वत्यै स्वाहा। इदं सरस्वत्यै इदं न मम।
ॐ भूम्यै स्वाहा। इदं भूम्यै इदं न मम।
ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम।
ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। इदं चन्द्रमसे न मम।
ॐ भौमाय स्वाहा। इदं भौमाय इदं न मम।
ॐ बृहस्पतये स्वाहा। इदं बृहस्पतये इदं न मम।
ॐ शुक्राय स्वाहा। इदं शुक्राय इदं न मम।
ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय इदं न मम।
ॐ भैरवाय नमः स्वाहा। इदं भैरवाय इदं न मम।
ॐ राहवे स्वाहा। इदं राहवे इदं न मम।
ॐ केतवे स्वाहा। इदं केतवे इदं न मम।
ॐ उग्राय स्वाहा। इदं उग्राय इदं न मम।
ॐ शतक्रतवे स्वाहा। इदं शतक्रतवे इदं न मम।
ॐ वरुणाय स्वाहा। इदं वरुणाय इदं न मम।

ॐ पितृभ्यो नमः स्वाहा। इदं पितृभ्यो इदं न मम।
ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः स्वाहा। इदं गंधर्वेभ्यो इदं न मम।
ॐ यक्षेभ्यो नमः स्वाहा इदं यक्षेभ्यो इदं न मम।
ॐ नागेभ्यो नमः स्वाहा इदं नागेभ्यो इदं न मम।
ॐ पिशाचेभ्यो नमः स्वाहा, इदं पिशाचेभ्यो इदं न मम।
ॐ राक्षसेभ्यो नमः स्वाहा इदं राक्षसेभ्यो इदं न मम।

ॐ स्थान देवातभ्यो नमः स्वाहा।
ॐ कुलदेवताभ्यो नमः स्वाहा।
ॐ ग्राम देवताभ्यो नमः स्वाहा।
ॐ दश दिक्पालेभ्यो नमः स्वाहा।
ॐ सर्वोभ्यो देवशक्तिभ्यो नमः स्वाहा।
ॐ सर्वेभ्यो देवपुरुषेभ्यो नमः स्वाहा।
ॐ सर्वेभ्यो महाप्राणेभ्यो नमः स्वाहा।
ॐ सर्वेभ्यो आदित्येभ्यो नमः स्वाहा।
ॐ सर्वाभ्यो मातृशक्तिभ्यो नमः स्वाहा।
ॐ सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः स्वाहा।
ॐ सर्वाभ्यो महाविद्याभ्यो नमः स्वाहा।

पूर्णाहुति

पात्र में सुपारी या नारियल पर घी लेकर एक चुटकी हवन-सामग्री लें। 'स्वाहा' उच्चारण के साथ आहुति छोड़ें—

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेय विक्रीणा वहा इषमूर्ज (गूं) शतक्रतो स्वाहा।
ॐ सर्वं वै पूर्णं (गूं) स्वाहा।।

वसोधारा

वसोधारा हेतु घी की अविच्छिन्न धारा हवन-कुंड में टपकाई

जाती है। पात्र में घी भरकर ऐसे घी टपकायें, कि घी की धारा टूटे नहीं, निम्न मंत्र उच्चारण करें—

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।

भस्म धारण

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्द्धनं।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

तदुपरांत हवन-कुंड की प्रदक्षिणा कर प्रणाम करें एवं आरती सम्पन्न कर हवन कुण्ड से भस्म ले धारण करें।

संसार के सर्वाधिक तेजस्वी मंत्र

काली मंत्र : क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।।

तारा मंत्र : ॐ ह्रीं त्रीं हुं फट्।।

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी मंत्र : ॐ ह्रीं कएइलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं।।

भुवनेश्वरी मंत्र : "ह्रीं"

छिन्नमस्ता मंत्र : ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।।

त्रिपुर भैरवी मंत्र : हसैं हसकरीं हसैं।।

मातंगी मंत्र : ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नमो भगवति उच्छिष्टचाण्डालि श्रीमातङ्गेश्वरी सर्वजनवशंकरि स्वाहा।।

कमला मंत्र : ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ज़गत्प्रसूत्यै नमः।।

धूमावती मंत्र : धूं धूं धूमावति ठः ठः।।

बगलामुखी मंत्र : ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।।

वन्दना

कर्पूर गौरं करुणावतारम्, संसार सारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविंदे, भवं भवानी सहितं नमामि।
नारायणो त्वं निखिलेश्वरो त्वं, माता पिता गुरु आत्मा त्वमेवं।
ब्रह्मा त्वं विष्णु रुद्रस्त्वमेवं, सिद्धाश्रमो त्वं गुरुवं प्रणम्यम्।।

आरती गुरुदेव की

ॐ जय गुरुदेव दयानिधि दीनन हितकारी,
जय जय मोह विनाशक भव बन्धन हारी।
ॐ जय जय . . .

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव गुरु मूरत धारी,
वेद पुराण बखानत गुरु महिमा भारी।
ॐ जय जय . . .

जप-तप तीरथ संयम दान विविध कीजै,
गुरु बिन ज्ञान न होवे कोटि यतन कीजै।
ॐ जय जय . . .

माया मोह नदी जल जीव बहे सारे,
नाम जहाज बिठाकर गुरु पल में तारे।
ॐ जय जय . . .

काम-क्रोध मद मत्सर चोर बड़े भारी,
ज्ञान खड्ग दे कर में गुरु सब संहारे
ॐ जय जय . . .

नाना पंथ जगत में निज-निज गुण गावें,
सबका सार बता कर गुरु मारग लावें।
ॐ जय जय . . .

गुरु चरणामृत निर्मल सब पातक हारी,
वचन सुनत श्री गुरु के सब संशय हारी।
ॐ जय जय . . .

तन मन धन सब अर्पण गुरु चरनन कीजै,
ब्रह्मानन्द परम पद मोक्ष गति दीजै।।
ॐ जय जय . . .

गुरु समर्पण स्तुति

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप. . .

मेरा निश्चय है बस एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊं मैं।
अर्पण कर दूं दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप. . .

जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं, ज्यों जल में कमल का फूल रहे।
मेरे सब गुण दोष समर्पित हों, भगवान तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप. . .

यदि मानव का मुझे जन्म मिले, तो तव चरणों का पुजारी बनूं।
इस पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप . . .

जब-जब संसार का कैदी बनूं, निष्काम भाव से कर्म करूं।
फिर अंत समय में प्राण तजूं, साकार तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप. . .

मुझमें तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूं तुम नारायण हो।
मैं हूं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में।।
अब सौंप दिया. . .

प्रार्थना

श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्या पुष्टिं श्रियं बलम्।
तेजमायुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन।।
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्।।

आरती श्री जगदीश्वर जी की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे।। ॐ जय...
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का। स्वामी...
सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।। ॐ जय...
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी। स्वामी...
तुम बिन और न दूजा, आस करूं किसकी।। ॐ जय...
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तरयामी। स्वामी...
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। ॐ जय...
तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता। स्वामी...
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता।। ॐ जय...
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति। स्वामी...
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति।। ॐ जय...
दीनबन्धु दुःख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे। स्वामी...
अपने हाथ उठाओ, द्वार (शरण) पड़ा तेरे।। ॐ जय...
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। स्वामी...
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।। ॐ जय...
तन मन धन और जीवन, सब कुछ है तेरा। स्वामी...
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।। ॐ जय...
तुम हो आदि अनादि, भक्तन हितकारी। स्वामी...
हम सब शरण तुम्हारी, काटो यम फांसी।। ॐ जय...
आरती गाऊं, गाय सुनाऊं, इतनी नहीं है शक्ति। स्वामी...

कृपा दृष्टि प्रभु राखो, दीजो चरणों में भक्ति।। ॐ जय. . .
पारब्रह्म परमेश्वर की आरती, जो कोई नर गावे,
ज्योरा मन शुद्ध होय जावे, ज्योरा पाप परा जावे,
ज्योरा सुख सम्पत्ति आवे, ज्योरा दुःख दारिद्र जावे,
वो तो भक्ति मुक्ति पावे, ज्योरा घर लक्ष्मी आवे।
भगत शिवानन्द स्वामी, रटत भोलानन्द स्वामी ॐ जय. .
इच्छा फल पावे।

क्षमा प्रार्थना

प्रत्येक साधक को क्षमा-याचना स्तोत्र का पाठ अवश्य करना चाहिए, जिससे यज्ञ में अज्ञानवश कोई भूल हो गई हो या त्रुटि रह गई हो तो, उस कारण यज्ञ व्यर्थ न जाए।

आवाहानं न जानामि नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं नैव जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।

मंत्राहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि। परिपूर्णं तदस्तु मे।।

यदक्षरं पदंभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि! प्रसीद परमेश्वरि।।

न तो मैं आवाहन करना जानता हूं, न विसर्जन करना जानता हूं और न पूजा करना ही जानता हूं। हे परमेश्वरी! क्षमा करो।

हे सुरेश्वरी! मैंने जो मंत्रहीन, क्रियाहीन और भक्तिहीन पूजन किया है, वह सब आपकी दया से पूर्ण हो।

शांति पाठ

कलश के जल से पुष्प या आम्रपत्र द्वारा उपस्थित लोगों पर जल अभिसिंचन करें—

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (गूं) शांतिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्ति र्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः

शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व (गूं) शांतिः शान्तिरेव शान्तिः।
सा मा शान्तिरेधि। ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्ति!!!

विसर्जन मंत्र

आवाहन किए गए देवी-देवताओं को भावभरी विदाई देते हुए पूजा-वेदी पर अक्षत, पुष्प बरसाये जाते हैं। विसर्जन के साथ भावना रहे, कि देव अनुग्रह बार-बार मिलता रहे—

गच्छ त्वं भगवन्नग्ने! स्वस्थाने कुण्डमध्यतः।
हुतमादाय देवेभ्यः शीघ्रं देहि प्रसीद मे।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः तत्र गच्छ हुताशन।।
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकाम समृद्धयर्थं पुनरागमनाय च।।

जय घोष

परम पूज्य गुरुदेव की जय।
वन्दनीया माताजी की जय।
स्वामी निखिलेश्वरानन्द महाराज की जय।
दादा गुरुदेव सच्चिदानन्द महाराज की जय।
सिद्धाश्रम के समस्त योगियों की जय।
समस्त देवशक्तियों की जय।
समस्त मातृशक्तियों की जय।
धर्म की जय हो।
अधर्म का नाश हो।
प्राणियों में सद्भावना हो।
विश्व का कल्याण हो।
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

जय घोष के अन्त में प्रसाद वितरण किया जाए।

दैनिक जीवन में यज्ञ का महत्व

हमारा जीवन वेगमय और निरन्तर परिवर्तनशील है। नित नए संघर्ष, घात-प्रतिघात का सामना करना पड़ता है। एक समस्या हटी नहीं कि दूसरी समस्या सामने आ जाती हैं, और सभी परिस्थितियों को अपने सापेक्ष बनाना आसान नहीं होता। समय कम है और चाह उपलब्धियों की आकांक्षा अधिक है, तब क्या सम्भव है एक लम्बी साधना पद्धति द्वारा उन विपरीत परिस्थितियों को अपने सापेक्ष बनाया जाए?

नहीं . . . क्योंकि आप एक समस्या को अपने सापेक्ष बनाएंगे, तो दूसरी सामने तैयार खड़ी मिलेगी, कभी धन की समस्या के रूप में, कभी पुत्री के विवाह की अड़चन के रूप में, तो कभी पुत्र की बेरोजगारी के रूप में अनेकों समस्याएं सामने खड़ी रहती हैं।

उन परिस्थियों में हमें कुछ उपायों की आवश्यकता होती है, जिससे कुछ ही समय में ज्यादा से ज्यादा उपलब्धियों को प्राप्त कर सकें। इसके लिए साधना क्रम के साथ-साथ यदि हम यज्ञ को इसमें शामिल कर लें, तो विपरीत प्रभावों को अपने सापेक्ष बनाने में ज्यादा अनुकूलता मिलती है, और यह क्रिया हमारे पूर्वज करते रहे, इसीलिए उनका जीवन ज्यादा सुखकर और आनन्दमय रहा है।

यज्ञ-विधान को पूर्णतः सम्पन्न करने के लिए यज्ञ-कुण्डों का विशेष महत्व माना जाता है। ये कुण्ड आठ प्रकार के होते हैं, जिनका प्रयोग विशेष प्रयोजन हेतु ही किया जाता है। हर यज्ञ-कुण्ड की अपनी अलग महत्ता होती है, और उसी के अनुरूप ही व्यक्ति को उस यज्ञ का लाभ प्राप्त होता है। जीवन में धन, वैभव, शत्रु संहार, विश्व शांति, पुत्र-प्राप्ति और विजय-प्राप्ति आदि कार्यों के लिए अलग-अलग कुण्डों का महत्व शास्त्रों में प्रतिपादित किया गया है, जो निम्नलिखित है–

१. योनि कुण्ड

योनि का आकार लिए यह कुण्ड कुछ-कुछ पान के पत्ते के आकार जैसा बनाया जाता है, जिसका एक सिरा अर्द्धचन्द्राकार होता हैं तथा दूसरा

त्रिकोणाकार होता है। इस तरह के कुण्ड का प्रयोग सुन्दर, स्वस्थ, तेजस्वी व वीर पुत्र की प्राप्ति हेतु ही किया जाता है।

राजा दशरथ ने भी पुत्र प्राप्ति के लिए इसी कुण्ड पर पुत्रेष्टि प्रयोग सम्पन्न कर राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघन की प्राप्ति की थी।

२. अर्द्धचन्द्राकार कुण्ड
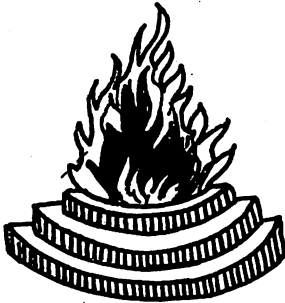
इस कुण्ड का आकार अर्द्धचन्द्राकार रूप में होता है। पारिवारिक जीवन की समस्याओं के निराकरण के लिए व सुखमय जीवन की प्राप्ति के लिए इस कुण्ड का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार के कुण्ड में आहुति पति-पत्नी दोनों को मिलकर देना अनिवार्य माना जाता है।

३. त्रिकोण कुण्ड

त्रिभुज के आकार में इस कुण्ड का निर्माण किया जाता है। इस प्रकार के कुण्ड का प्रयोग शत्रुओं को परास्त कर उन पर विजय-प्राप्ति हेतु किया जाता है। रावण, जो बहुत बड़ा तांत्रिक था, उसने भी राम पर विजय पाने के
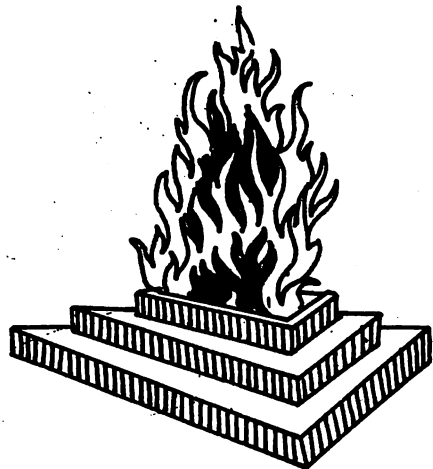
लिए इस यज्ञ-कुण्ड का प्रयोग कर उन्हें परास्त करना चाहा था, किन्तु यज्ञ-विधान पूरा न हो पाने के कारण वह युद्ध में विजय न प्राप्त कर सका।

४. वृत्त कुण्ड

यह कुण्ड गोलाकृति लिए हुए होता है। जन-कल्याण हेतु देश में शांति बनाये रखने के लिए ही इस प्रकार के यज्ञ-कुण्ड का प्रयोग बड़े-बड़े ऋषियों, मुनियों आदि ने पूर्व काल में किया है, जिससे कि देश में फैले अत्याचार, अशांति और बढ़ते दुष्प्रभावों को समाप्त कर शांति की स्थापना की जा सके।

५. समअष्टास्र कुण्ड

इस प्रकार के अष्टाकार कुण्ड का प्रयोग रोगों के निराकरण के लिए किया जाता रहा है। जीवन में स्वस्थ, सुन्दर और निरोगी बने रहने क लिए ही इस यज्ञ-कुण्ड का विधान है।

६. समषडस्र कुण्ड

यह कुण्ड छः कोण लिए होता है। इस प्रकार के यज्ञ-कुण्डों का प्रयोग प्राचीन काल में बहुत अधिक होता था, राजा-महाराजा विच्छेदन क्रिया को सम्पन्न करने के लिए, शत्रुओं में वैमनस्यता का भाव जाग्रत करने के लिए ही इस प्रकार के कुण्डों का प्रयोग कर यज्ञ-विधान सम्पन्न किया

करते थे, जिसके द्वारा वे शत्रु पक्ष की भूमि, राज्य आदि को हथिया कर या युद्ध में विजय-प्राप्ति के लिए इस क्रिया को सम्पन्न कर अनेक राज्यों के अधिपति कहलाते थे।
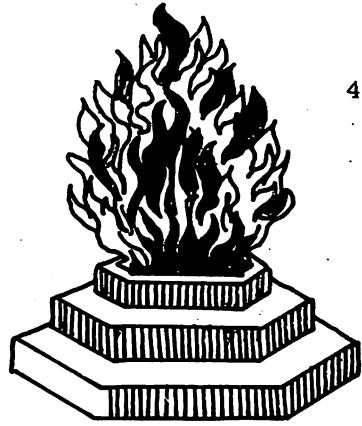
७. चतुष्कोणास्त्र कुण्ड

चतुर्वर्ग के इस कुण्ड का प्रयोग सर्व कार्यों की सिद्धि हेतु किया जाता है, अब वह चाहे भौतिक कार्य हो या आध्यात्मिक, दोनों ही प्रकार के कार्यों में इस चतुष्कोणास्त्र कुण्ड का प्रयोग कर साधक अपने जीवन में अनुकूलता प्राप्त कर सकता है।

८. पदम् कुण्ड

अठारह भागों में विभक्त कमल के फूल के आकार का यह कुण्ड दिखने में बहुत ही सुन्दर दिखाई देता है, जिसका प्रयोग तीव्रतम प्रहारों व मारण प्रयोगों से बचने हेतु किया जाता है, अतः इस यज्ञ-कुण्ड पर यज्ञ को पूर्ण विधि-विधान सहित सम्पन्न कर तीव्रतम तांत्रिक प्रभावों से बचा जा सकता है।

गुरु मूर्ति सदा ध्यायेत गुरु मंत्र सदा जपेत

. . . शिष्य के जीवन की पूर्णता ही नहीं उसके जीवन का प्रारम्भ भी होता है – गुरु ! तो क्यों न प्रत्येक दिवस प्रारम्भ हो गुरुदेव के पुण्य स्मरण से . . . इसी चेतना को जाग्रत करने, स्पष्ट करने व शिष्य के जीवन में उतार देने हेतु ही तो सृजित की गई है ये कृतियां . . .

तांत्रोक्त गुरु पूजन

आपने हृदय में गुरु स्थापन करना समस्त देवताओं कि स्थापन करने से ज्यादा महत्वपूर्ण है। ऋग्वेद और एक सामान्य व्यक्ति किस प्रकार से गुरु को अपने हृदय में स्थापित कर अपने जीवन में स्थापित कर सकता है, प्रस्तुत ग्रंथ में वैदिक, तांत्रोक्त, तिब्बती तथा अन्य विधियों से गुरु को जीवन में समाहितिकरण की क्रिया की गई है। *न्यौछावर 30/-*

दैनिक साधना विधि

व्यक्ति किस प्रकार से नित्य पूजन कर्म करें, साधनामय दिशा की ओर कौन सी पूजन विधि प्रातः काल के लिए उपयोगी है, श्रेष्ठतम है, इसी विधान सहित प्रस्तुत किया गया है इसमें . . . *न्यौछावर 30/-*

ज्योतिष और काल निर्णय

समय के सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रभाव को ज्ञात किया जा सकता है और उसके अनुसार कार्य की सफलता को निश्चित किया जा सकता है . . . वराहमिहिर के ही ग्रंथ को आधार बनाकर रचित किया गया है यह ग्रंथ

न्यौछावर 150/-

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर फोन : 0291-432209, फैक्स : 0291-432010

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली फोन : 011-7182248, फैक्स : 011-7196700

खड़े तो दोनो ही थे गुरु और गोविद . . . पर गुरु ही आगे बढ़े, अपने भक्त को अपने मे समेटने के लिए, शिष्य को अपने अमृत वचनों से भिगोने के लिए, . . . यही अनुभव होगा आपको भी, इन कैसेट् को सुनकर, भीगकर . . .

"सिद्धाश्रम" में सम्पन्न प्रयोग

* रक्त कण कण में गुरु स्थापन प्रयोग
* हनुमान साधना
* सौभाग्य दायिनी महालक्ष्मी प्रयोग
* षोडश योगिनी प्रयोग
* विजय सिद्धि
* स्थिर लक्ष्मी प्रयोग (लक्ष्मी आबद्ध)
* स्वर्ण देहा अप्सरा प्रयोग

* न्यौछावर प्रति कैसेट् - 30/-

निखिलेश्वरानन्द स्तवन

परम पूज्य गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी जो इस युग में डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी के रूप में विख्यात हैं, जो योगियों में परमश्रेष्ठ, अदभुत, तेजस्वी, अद्वितीय व्यक्तित्व लिए हुए एक महामानव हैं, जिनकी अलौकिक शक्तियां असीमित हैं, सिद्धियां उनके समक्ष नृत्य करती रहती हैं, हजारों-हजारों योगी भी जिनके सामक्ष नतमस्तक रहते हैं, जिन्हें वेद, पुराण, उपनिषद, ज्योतिष, आयुर्वेद मीमांसा यज्ञ सभी क्षेत्रों में पूर्णता प्राप्त है, जिनके लिए पूरा सिद्धाश्रम आंखें बिछाये बैठा रहता है, उन्हीं योगीराज निखिलेश्वरानन्द जी की स्तुति में सिद्धाश्रम के ही उच्चकोटि के योगी स्वामी ब्रह्माण्डेश्वरानन्द जी द्वारा संग्रहित ब्रह्माण्ड की ध्वनियों से निर्मित यह स्तवन, जिसका प्रत्येक श्लोक अपने आप में अदभुत और अनिर्वचनीय है, प्रत्येक श्लोक अपने आप में मंत्रमय है, तंत्रमय है, पूर्णत्वमय है और अदम्य है। पूज्य गुरुदेव का स्मरण कर इस स्तवन का पाठ करने से सम्पूर्ण पाप, ताप, शोक, दुःख, दारिद्रय आदि समाप्त हो जाते हैं एवं सुख, शांति व सौभाग्य का उदय होता है।

यह निखिलेश्वरानन्द स्तवन मात्र स्तवन नहीं है, ब्रह्माण्ड से निसृत आनन्दमय ध्वनि है, जो अपने आप में ही अद्वितीय है। और जब साधक या साधिका इस स्तवन का उच्चारण करते हैं . . . गाते हैं, तो मिटती है चिन्ताएं, अभाव, कष्ट, पीड़ा रोग और बाधाएं और प्राप्त होता है अखण्डानन्द ब्रह्मानन्द, पूर्णत्व, ध्यान समाधि और पूर्णता।

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर फोन : 0291-432209, फैक्स : 0291-432010

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली फोन : 011-7182248, फैक्स : 011-7196700